International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकृति–चित्रण की दृष्टि से नेपाली के काव्य का वैशिष्ट्य

डॉ. सुधांशु कुमार
हिन्दी शिक्षक,
सिमुलतला आवासीय विद्यालय, सिमुलतला (जमुई)–811316

प्रकृति का सर्वांगीण चित्रण नेपाली के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता रही है। प्रकृति को जितनी निकटता एवं गहराई के साथ उन्होंने देखा, समझा एवं महसूस किया है वह उनकी कविता में अद्वितीय है। उनकी प्रकृति सम्पूर्णरूपा है जो सहज ही सभी को अपनी ओर खींचती है, आकर्षित करती है। अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन कवियों की तरह उन्होंने उसे अनुरंजन एवं उद्दीपन का साधन बनाकर व्यक्तिवादिता के घेरे में आबद्ध नहीं किया और न ही व्यष्टिगत कुंठा की अभिव्यक्ति का जरिया ही बनाया बल्कि उसे उन्मुक्त करके समष्टिगत फैलाव दिया, प्रसार दिया और राष्ट्रचेतना की कड़ी से जोड़कर प्रकृति को काव्य में एक नया आयाम दिया। उन्होंने पुरानी एवं समकालीन प्राकृतिक रूढ़ियों को ध्वस्त कर अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक नई दृष्टि विकसित की और बताया कि यदि प्रकृति का सकारात्मक प्रयोग कविता में हो तो नजारा बदलने में तनिक भी देरी न लगेगी।

नेपाली ने प्रकृति को परंपरागत घेरे से मुक्त करके यह साबित कर दिया कि वे उस परंपरा के पोषक नहीं है जो मनुष्य एवं उसकी भावना को बांधती है। उन्होंने बचपन से ही अपना सर्वाधिक बहुमूल्य समय प्रकृति की गोद में, उसके प्रांगण में बिताया था। इसीलिए वह उनके काव्य में सहज स्वाभाविक रूप से प्रकट हुई है। उन्होंने वादों से अलग रहकर जीवन और प्रकृति का स्वच्छन्द गीत गाया है। फलतः उनकी कविताओं में प्रकृति अपनी स्वतंत्रता–स्वच्छंद एवं संपूर्ण सत्ता के साथ विराजमान स्पन्दनशील एवं प्राणवान है। उन्होंने उसे मात्र उद्दीपन, आलंबन और प्रतीकादि के घेरे में आबद्ध नहीं किया। उन्होंने उसकी शक्ति पहचानी और उसके आंतरिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की। अतः प्रकृति उनके जीवन की दशा एवं दिशा निर्धारण की शक्ति है।

नेपाली का बाल जीवन पर्वतीय प्रदेश में बीता, साथ ही जीविका के सिलसिले में भी भारत के भिन्न–भिन्न प्रांतों में रहने के अवसर भी प्राप्त हुए फलतः उनकी कविता में प्रकृति के बड़े ही सजह, स्वाभाविक और सुन्दर चित्र प्राप्त होते हैं। नेपाली ने प्रकृति प्रेम को प्रायः देश प्रेम एवं जन प्रेम के रूप में व्यवहृत किया है और इस संदर्भ में अन्य छायावादी कवियों और उसमें एक स्पष्ट अंतर दीख पड़ता है। नेपाली ने अपनी राष्ट्रीयता प्रायः प्राकृतिक चित्रों के माध्यम से व्यक्त की है। उनकी देशदहन, पंचनद के तीर पर, झलक, बेर, मंसूरी की तलहटी एवं अलख जैसी अधिकांश कविताएँ ऐसी है; जो प्रकृति वर्णन के माध्यम से राष्ट्रीय उद्‌बोधन की पीठिका प्रस्तुत करती है। ऐसा नहीं है कि नेपाली यह अनायास करते हैं बल्कि पूरी सजगता के साथ ऐसा करते हैं, जबकि छायावादी कवि निराला, पंत, प्रसाद, महादेवी, रामकुमार वर्मा आदि कवि–कतिपय अपवाद परक कविताओं को छोड़कर–राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम को माध्यम के रूप में प्रकृति चित्रण के दृश्य नहीं उकेड़ते यह नेपाली की अपनी विशेषता है। इस संदर्भ में नेपाली के प्रकृति वर्णन पर आचार्य शुक्ल का कथन अत्यंत सटीक और पूर्णतः लागू होता है–''यदि किसी को अपने देश से प्रेम है, तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु, पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, पत्ते, कण, पर्वत, नदी, निर्झर, सबसे प्रेम करना होगा, सबको वह चाह भरी दृष्टि से देखेगा, सबकी सुधि करके वह विदेश में आँसू बहाएगा। जो यह भी नहीं जानते कि कोयल किस चिड़िया का नाम है वे यदि दस बने ठने मित्रों के बीच प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी का परता बताकर प्रेम का दावा करे तो उनसे पूछना चाहिए कि भाइयों, बिना परिचय का यह प्रेम कैसा।'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देश प्रेम से जुड़ा नेपाली का यह प्रकृति–प्रेम छायावादियों में दुर्लभ है। नेपाली एवं उनके समकालीन कवियों की प्रकृति के गहन अध्ययनोपरांत उनके प्राकृतिक काव्यगत वैशिष्ट्य को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत रखा जा सकता है।[1]

नेपाली की भाषा अभिधत्मक है, इसीलिए उनकी भाषा सिर्फ प्रबुद्ध वर्ग की भाषा न रहकर आम जन की समझ के अधिक करीब है। वे यथासंभव तत्सम एवं कठिन शब्दों के प्रयोग से बचते नजर आते हैं। उनकी कविताओं में यदा–कदा ये शब्द आये भी हैं तो सहजता के साथ ही। सहज शब्दों के प्रयोग में नेपाली कुशल हैं। दो–चार स्वाभाविक उदाहरण देखने से पता लगाया जा सकता है–

देहरादून के मधुर बेर
जंगल में मिलते ढेर–ढेर
लाने में पड़ता बहुत पफेर
थकते न नयन ये हेर–हेर
रह जाते काँटे घेर–घेर
दूँ मैं बिखेर रे कई सेर।[2]

इसके भाषा सौन्दर्य पर विचार करने से पता चलता है कि ये बेर वाटिका के बेर–कलमी बेर नहीं हैं, ये जंगली बेर हैं, वे बेर के लिए चल उठते हैं, अपने पैरों में काँटें चुभा लेते हैं एवं पैरों को लहुलुहान करके इन जंगली बेरों को ढेर के ढेर इकट्ठे कर लाते हैं। यह ठीक है कि इन्हें लाने में बहुत दूर जाना पड़ता है, बहुत फेर लगाना पड़ता है, घूम फिरकर जंगल झारी को पार कर जाना पड़ता है, आपको हिम्मत नहीं है किन्तु उन ग्रामीण बच्चों के उत्साह को आप क्या कहेंगे जो अनन्त कष्ट सहकर भी इन बेरों के कई सेर आपके सम्मुख उठा ला सकते हैं। यह हिम्मत, प्रकृति के बेटे में ही हो सकती हैं जो किन्हीं भी विषम परिस्थितियों में अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त करने का साहस रखते हैं शहरी जन जीवन शैली किसी तरह के जोखिम की इजाजत नहीं देता।

सहज भाषा सौन्दर्य एवं स्वाभाविकता की दृष्टि से उनकी 'सरिता' नामक कविता की निम्न पंक्तियों को देखा जा सकता है–

यह लघु सरिता का बहता जल
कितना निर्मल, कितना शीतल।[3]

इन पंक्तियों में जो सहजता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। कृत्रिमता से रहित एवं बिना अलंकरण सीधे सपाट शब्दों में अपनी अभिव्यक्ति दे दी है। इस जल की निर्मलता, शीतलता उसका निरंतर प्रवाह, इसके वर्णन से ही सजीव हो उठता है। 'कितना' शब्द में अर्थ का कितना गांभीर्य है। 'कितना निर्मल कितना शीतल' यह काव्य उसकी सर्वाधिक निर्मलता तथा सर्वाधिक शीतलता का परिचायक है। 'कितना' शब्द उन सारे अर्थों की अभिव्यंजना करता है जितने अर्थ की आवश्यकता है, यह जल कितना निर्मल है? जितना होना चाहिए। कितना शीतल है? जितना होना चाहिये। यह 'कितना' कोई नाप–तौल, तराजू वाला नाप तौल नहीं है। वह हृदयगत भावों का सतत प्रवाह है जो सरिता का सहारा लेकर निकल पड़ता है। आगे देखें–

पीपल के पत्ते गोल–गोल
कुछ कहते रहते डोल–डोल।[4]

पंत की प्रकृति भी चुप नहीं बैठती। वह भी कुछ कहती है, कुछ प्रश्न करती है, हृदय हरती है किन्तु नेपाली की भाषा एवं पंत की अभिजात्य भाषा में अन्तर सहज रूप से देखा जा सकता है।

पपीहों की वह पीन पुकार
निर्झरों की भारी झर–झर
झिंगुरों की झीनी झनकोर
घनों की गुरु गंभीर घहर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बिन्दुओं की छनती छनकार
दादुरों के वे दुहरे स्वर
हृदय हरते थे विविध प्रकार
शैल–पावस के प्रश्नोत्तर।[5]

यहाँ पंत की प्रकृति के उपादान मिलकर हृदय हरने की कोशिश करते हैं तो नेपाली के पीपल के पत्ते ही 'कुछ' की अभिव्यक्ति करने में पूर्ण सक्षम हैं।

कवि अपनी भाषा को सजाने–सँवारने के लिए ध्वनि, शब्द, वाक्य, यति, लय, तुक आदि में अनेक प्रयोग करता है। ध्वनि का विकास, मधुर कर्कश ध्वनि का लय प्रसंगानुकूल प्रयोग, शब्दों की पुनरुक्ति, सहयोगी या विरोधी शब्दों को साथ–साथ प्रयोग, वाक्यों की पुनरुक्ति, वाक्यों का वक्र प्रयोग, यति में भेद, लय का आरोह–अवरोह, तुक का प्रयोग आदि के द्वारा काव्य–सौन्दर्य का निर्माण किया जाता है। अलंकार और लाक्षणिक प्रयोग नेपाली की भाषा में किसी आग्रह का परिणाम नहीं है बल्कि कहीं–कहीं आया भी है तो एक स्वाभाविकता के अंतर्गत ही है। उनकी भाषा में लाक्षणिक प्रयोग की न्यूनता है, किन्तु इसका पूर्ण अभाव नहीं है। वैसे उन्होंने विशेष रूप से ध्वनि प्रयोग, शब्दों की पुनरुक्ति, वाक्यों की पुनरुक्ति, दोहरा प्रयोग के माध्यम से सरल सौन्दर्य निर्माण की चेष्टा की है और इसमें उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली हैं इनके द्वारा और भी कवि अपने काव्य में सौन्दर्य–सृष्टि का प्रयास करते हैं। कलक्टर सिंह केशरी की निम्न पंक्तियों में पुनरुक्ति के द्वारा प्रकृति को सहज ग्राह्य बनाने की चेष्टा की गयी है–

बरस–बरस तूने बरसाये सागर
फिर भी इन नयनों के गागर
हैं रीते के रीते
दिन बीते युग बीते
बरस–बरस तूने सरसाई रेती
सजा गए उत्तर में खेती
ये मोती तन चीते
दिन बीते युग बीते।[6]

पंत की पुनरुक्ति प्रयोग के पीछे नहीं हैं–

रुप, रंग, रस, सुरभि, मधुर, मधु
भर–भर मुकुलित अंगों में माँ
क्या तुम्हें रिझाती है वह ?
खिल–खिल बाल उमंगों में
हिल मिल हृदय तरंगों में?[7]

बालस्वरूप राही भी पुनरुक्ति प्रयोग में पीछे नहीं हैं–

हाथ जोड़कर करती हूँ, तुमसे केवल मनुहार
ओ कारे कजरारे बादल, घिरो न मेरे द्वार
वैसे ही कमजोर बहुत होते बिरहिन के प्राण
उस पर भी बरसाए जाते तुम बूँदों के बाण
गरज–गरज ऐसे भी कोई करता होगा शोर
लरज–लरज जाता मन मेरा पीपर–पात समान।[8]

रमानाथ अवस्थी–

धूप है ज्यादा, कम है छाया
आखिर यह मौसम भी आया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

धुँधली है तारों की गलियाँ
पाप के रस्ते चमकीले हैं
काँटे हैं वैसे के वैसे
फूलों के चेहरे पीले हैं
खुशबू भटके मारी–मारी
मधुबन का हर अंग लजाया
आखिर यह मौसम भी आया।[9]

और इन सभी के बीच नेपाली की पुनरुक्ति भी–

जग की एक डाल पर मैं हूँ,
एक डाल पर तुम हो
मैं जिस प्रेम ताल पर नाचूँ
उसी ताल पर तुम भी
हम दोनों के नयन चार हैं
पर डोरी है एक
हम दोनों हैं चोर प्रेम के
पर चोरी है एक
इन नयनों का भोला पंछी
लड़ते–लड़ते लड़ जाता है।[10]

नेपाली की भाषा में ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्यों की पुनरुक्ति द्वारा संगीतात्मकता लाने का प्रयास किया गया है। नेपाली की भाषा के ऐसे प्रसंग बड़े ही प्रभावोत्पादक एवं मार्मिक हैं। वे अधिकतर एक ही शब्द को बार–बार दुहराकर स्वर लहरी उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं जैसे–अंग–अंग, जाग–जाग, खोल–खोल, गोल–गोल, डोल–डोल, उकसा–उकसा, मन्द–मन्द, गा–गा, उठ–उठ, रह–रह, छील–छील, छिदा–छिदा, घर–घर, साथ–साथ, प्रथम–प्रथम, चुन–चुन इत्यादि के प्रयोग नेपाली की लगभग सभी रचनाओं में उपलब्ध हैं।

नेपाली ने एक ही शब्द की पुनरुक्ति के अतिरिक्त सहायक शब्दों समानार्थी शब्दों, समान ध्वनि वाले शब्दों, ध्वन्यात्मक शब्दों, को भी एक साथ रखकर सौन्दर्य तथा संगीत निर्माण की चेष्टा की है। ऐसे कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं–आर–पार, जगमग, लगभग, लबालब, राजा–रानी, हँसी खुशी, झनझना, आस–पास, रात–दिन, फल–फूल इत्यादि।

नेपाली में तुकबंदी एवं अन्त्यानुप्रास की भरमार है। वे प्रायः शब्दों की अन्तिम ध्वनि की ही पुनरुक्ति नहीं करते बल्कि पूरा का पूरा शब्द ही दुहरा डालते हैं या फिर शब्द का बहुलांश दुहराते हैं ऐसे प्रयोग उनके काव्य में सर्वत्र द्रष्टव्य हैं–

मैं सरस सोमरस घोल–घोल
तारो सा खिड़की खोल–खोल
पीपल पल्लव सा डोल–डोल
विहगों की बोली बोल–बोल।[11]
.....
अन्त रात का शयन
आज फूल का चयन
नींद खुले नयन
ओस से घुले नयन।[12]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में पुनरुक्ति के साथ अनुप्रसादि की स्वाभिवक अभिव्यक्ति अपेक्षाकृत नेपाली की पंक्तियों में अधिक सहजता के साथ बिना किसी आग्रह के देखी जा सकती हैं

निष्कर्षतः कहा जाए तो नेपाली की कविता सभी कसौटियों पर खड़ी उतरती है। छन्द की कसौटी हो या शैली की, भाषा की हो या भाव की वह अर्थ की हो या बिम्ब की, सभी जगह अपनी पूर्णता के साथ प्रकट होती है। यह विशिष्टता उन्हें उनके समकालीनों से अलग करती है उनकी प्रकृति उनके काव्य में जहाँ भी और जिस रूपों में भी उपस्थित हुई है वह नये अंदाज, नये परिधन में।

संदर्भ ग्रंथ :

1. चिन्तामणि, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 24.
2. उमंग, पृ. 73.
3. वही, पृ. 15.
4. वही, पृ. 12.
5. पल्लव, पंत, पृ. 66
6. दिन बीते युग बीते, स्पुफट कविताएँ, कलक्टर सिंह केशरी, के.ग्र., पृ. 414.
7. वसन्त श्री, पल्लव, पंत, पृ. 88
8. बाल स्वरूपराही, हमारे लोकप्रिय गीतकार, सं. शेरजंग गर्ग, पृ. 55
9. रमानाथ अवस्थी, सं. शेरजंग गर्ग, पृ. 54
10. वही, पृ. 21
11. वही, पृ. 65
12. वही, भूमिका, पृ. 5, 6.